आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और नैतिक ज़िम्मेदारी : शांति के लिए भूमिका

द्वारा – डॉ० वन्दना मिश्रा
PDF (Teacher Education) ICSSR, असिसटेन्ट प्रोफेसर (विशेष शिक्षा विभाग),
नेहरू ग्राम भारती (मनित विश्वविद्यालय) प्रयागराज

सारांश **—आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) मानव सभ्यता की प्रौद्योगिकीय प्रगति का सबसे बड़ा मील का पत्थर है, जिसने विज्ञान, अर्थव्यवस्था, प्रशासन, स्वास्थ्य, शिक्षा, सुरक्षा हर क्षेत्र को पुनर्परिभाषित कर दिया है। इसकी असीम क्षमता का सकारात्मक उपयोग तभी संभव है जब नैतिकता और जिम्मेदारी के साथ इसका विकास व उपयोग हो। AI की ताकत डेटा प्रोसेसिंग, पूर्वानुमान, समस्या-समाधान, स्वायत्त निर्णय बहुत लाभकारी है, एवं इसके दुष्प्रभाव उतने ही गहरे । उदाहरण चयनित डेटा पर आधारित एल्गोरिद्म से असमानता, जातिगत/ लिंगगत /सामाजिक पूर्वाग्रह, डिजिटल निगरानी से गोपनीयता संकट, ब्लैक-बॉक्स निर्णयों से जवाबदेही का विखंडन तथा स्वचालन से रोजगार संकट। खासकर हथियारों, युद्ध रणनीति व आतंक-नियंत्रण जैसी संवेदनशील क्षेत्रों में AI का अनियंत्रित प्रयोग पूरी दुनिया की शांति के लिए बड़ा खतरा है । .नैतिकता के दायरे में AI को जिम्मेदार और विवेकपूर्ण बनाना पारदर्शी, उत्तरदायी, निष्पक्ष, सहभागी, समावेशी आदि आवश्यक है । इसके लिए तकनीकी, नीति, कानूनी, शैक्षिक, संस्थागत और सामाजिक हर स्तर पर सुधारों और सतत संवाद की आवश्यकता है। UNESCO, भारत सरकार, नीति आयोग, Responsible AI समूह, सार्वजनिक-निजी सहयोग, Explainable AI, डेटा संप्रभुता, bias-free automation, grievance redressal, समावेशी नीति सभी औजार समाज को शक्ति भी देते हैं और निरंतर जिम्मेदार बनाते हैं□□□.शांति से जुड़े मसलों अभिव्यक्ति, स्वायत्तता, न्याय, समानता, संवाद इत्यादि में AI की भूमिका तब सकारात्मक होती है जब उसकी नैतिकता तकनीकी डिजाइन से लेकर नीति, शिक्षा, जागरूकता, सामाजिक सहभागिता और वैश्विक सहयोग तक गहराई से जुड़ी हो। भविष्य की स्थायित्वपूर्ण, सुरक्षित, विवेकशील और न्यायसंगत सभ्यता के लिए AI को मानवता, आत्मविवेक व शांति के सिद्धांतों का सतत संरक्षक बनाना हर नीति निर्माता, तकनीकीविद, शिक्षक, समाज व वैज्ञानिक की सामूहिक जिम्मेदारी है।**

की वर्ड **— आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, नैतिक जिम्मेदारी, वैश्विक शांति**

I. प्रस्तावना

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) ने दुनिया भर में तकनीकी, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिदृश्य को परिवर्तित किया है। असीम संभावनाओं के साथ, AI हमारे समाज के लिए अमूल्य योगदान दे सकता है न्याय, स्वास्थ्य, शिक्षा, रक्षा, और, विशेषकर, वैश्विक शांति के क्षेत्र में। लेकिन AI के ज़िम्मेदार और नैतिक उपयोग के बिना इसके दुष्प्रभाव विनाशकारी भी हो सकते हैं। अतः शांति की दिशा में और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस नैतिक उत्तरदायित्व पर शोध अत्यधिक प्रासंगिक है ।

II. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: परिचय

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अर्थ है "ऐसी मशीनें या सॉफ्टवेयर जो मानव के समान सोच, तर्क, समस्या-समाधान और निर्णय-निर्माण में सक्षम हों"। इसमें मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग, पैटर्न रिकग्निशन, बिग डेटा, न्यूरल नेटवर्क्स, सेल्फ-एल्गोरिद्म आदि तकनीकें सम्मिलित होती हैं। इसका विकास 20वीं सदी में कंप्यूटर और सॉफ्टवेयर प्रणाली के आविष्कारों के साथ हुआ। आज AI व्यापक क्षेत्रों जैसे स्वास्थ्य, रक्षा, शिक्षा, पर्यावरण, वित्त, और मीडिया में तीव्र गति से किया जा रहा है।

नैतिक ज़िम्मेदारी: अवधारणा और महत्व - नैतिकता (Ethics) - नैतिकता 'सही' और 'गलत' के विवेकपूर्ण चयन और उसके पालन की सार्वकालिक प्रक्रिया है, जिसमें सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों, न्याय, स्वतंत्रता, मानवाधिकार, समानता और शांति जैसे तत्व सम्मिलित होते हैं। AI के उपयोग में नैतिक विचारों की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि इसका प्रभाव विशाल, गहरा एवं जटिल है। यह निर्णयों में मानव हस्तक्षेप (human agency) को प्रभावित करता है।

इसके माध्यम से सामाजिक, आर्थिक, विधिक, तकनीकी और मनोवैज्ञानिक परिणाम उत्पन्न होते हैं ।

II. शांति स्थापित करने में AI का योगदान–

शांति (Peace) का अर्थ है 'केवल युद्ध विराम नहीं', बल्कि हिंसा, अन्याय, पक्षपात, असमानता, आतंक, भय और दमन रहित समाज की स्थापना। वास्तविक शांति सकारात्मक मानवीय लक्ष्यों (आर्थिक-सामाजिक विकास, मानवाधिकार, न्याय, समावेशी प्रगति) की पूर्ति से आती है। शांति में AI का योगदान निम्नलिखत है

- AI सक्षम टूल्स: संघर्षों की पूर्वानुमान क्षमताएँ, विवाद-विन्यास, हेट-स्पीच/फेक न्यूज की पहचान, शांति-वार्ता वृद्धि आदि।
- डेटा विश्लेषण: उग्रवाद, अपराध, या भेदभावजन्य घटनाओं की समय पर रोकथाम।
- आपदा प्रबंधन: युद्ध-प्रभावित क्षेत्रों में राहत।
- शिक्षा और स्वास्थ्य में सुधार से सामाजिक सद्भाव और समावेशिता।

III. नैतिक चुनौतियाँ

- पूर्वाग्रह (Bias) -

AI प्रणाली जिस डेटा पर प्रशिक्षित होती है, वह पूर्वाग्रही हो सकता है जैसे कि जाति, धर्म, लिंग, क्षेत्र, भाषा आदि से जुड़े भेदभाव। इससे न्यायसंगत निर्णय नहीं हो पाते ।

- जवाबदेही (Accountability) और पारदर्शिता (Transparency)

AI आधारित निर्णयों में जब गड़बड़ी होती है, तो कौन जिम्मेदार होगा? निर्माता, उपयोगकर्ता या स्वयं AI? AI के 'ब्लैक-बॉक्स' स्वरूप में पारदर्शिता की कमी प्रमुख समस्या है ।

- गोपनीयता (Privacy) और डेटा संरक्षण

AI आधारित प्रणालियाँ बहुत अधिक निजी/सामाजिक डेटा प्राप्त करती हैं। अनियंत्रित डेटा संग्रहण और उपभोग, नागरिक स्वतंत्र और निजता के अधिकार के लिए खतरा है

आर्टिफिशियल मोरल एजेंसी

क्या AI को नैतिक एजेंट माना जा सकता है? अक्सर ऐसे प्रश्न उठते हैं, क्या AI के पास वास्तविक सहानुभूति, विवेक और मूल्य आधारित निर्णय लेने की क्षमता है, या केवल गणनात्मक निर्देशों का पालन?

- शस्त्रीकरण (Weaponization)

AI का सैन्य उपयोग (killer drones, automated weapon systems, surveillance) शांति, मानवाधिकार और अंतर्राष्ट्रीय कानून के लिए गंभीर चिंता का विषय है। अनियंत्रित सैन्य AI वैश्विक शांति को खतरे में डाल सकता है।

IV. AI के वैश्विक व भारतीय स्तर पर नैतिक मानक एवं पहलें

UNESCO और वैश्विक नैतिकता दिशानिर्देशवर्ष 2021 में यूनेस्को के 41वें महासत्र में AI की नैतिकता पर वैश्विक सिफारिशें स्वीकृत हुईं। जिसमें महिलाएँ और अल्पसंख्यक समूह AI डिज़ाइन में उचित प्रतिनिधित्व, डेटा की सुरक्षा, और बच्चों पर मनोवैज्ञानिक प्रभावों के नियमन के उपाय प्रस्तावित किए गए । साथ ही सदस्य देशों को डिजिटल, मीडिया, सूचना साक्षरता और AI नैतिकता कौशल को बढ़ावा देने का आह्वान किया । Responsible AI की भारतीय रणनीतिनीति आयोग का #AIForAll अभियान, AI के नैतिक, न्यायपूर्ण और समावेशी उपयोग की नीति। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के 5 स्तम्भ - जवाबदेही, पारदर्शिता, निष्पक्षता, गोपनीयता, सुरक्षा है। ।

V. नैतिकता के सन्दर्भ में अंतर्राष्ट्रीय संगठनों, नीति-निर्धारकों और भारत सरकार ने कई पहलें की हैं:

- UNESCO की वैश्विक सिफारिशें: मानव अधिकार, महिला प्रतिनिधित्व, बच्चों की सुरक्षा, डेटा की संप्रभुता, नागरिक स्वतंत्रता।
- Responsible AI for All (भारत नीति आयोग): समावेशी, निष्पक्ष, उत्तरदायी AI विकास।
- वैश्विक शांति के लिए अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, युद्ध-नियंत्रण समझौतें (UN, G20 आदि)
- AI Ethics Boards, Auditing, Data Sovereignty निर्णय.

VI. शांति के लिए AI में नैतिक जिम्मेदारी के आयाम –

तकनीकी आयाम

AI एल्गोरिद्म में नैतिकता और शांति-संबंधी मूल्यों का प्रोग्रामिंग स्तर पर समावेश।बायस-मुक्त, explainable, व सुरक्षित डिज़ाइन।मोनिटरिंग व ऑडिट ट्रेल्स की व्यवस्था।

संगठनात्मक आयाम
नीति निर्धारकों, डेवलपर्स, उपयोगकर्ताओं में नैतिक शिक्षा व जागरूकता । जवाबदेही तय करने के लिए सशक्त कानूनी व संस्थागत ढांचा। AI Ethics officers, Fairness Auditors आदि की नियुक्ति

सामाजिक आयाम
विविध समूहों की समावेशिता, सर्वाधिक प्रभावित वर्गों को निर्णय प्रक्रिया में शामिल करना।संवाद, सहयोग व पारदर्शिता से सामाजिक विश्वास निर्माण ।

अंतरराष्ट्रीय सहकार्य
वैश्विक स्तर पर मानकों का निर्माण, युद्ध व हथियार नियंत्रण में साझा नियम। अंतरराष्ट्रीय समझौताएँ व पहलें: Responsible Use in Military Domain (REAIM), संयुक्त राष्ट्र AI रणनीति।
इस प्रकार तकनीकी, संगठगात्मक, सामाजिक और अंतर्राष्ट्रीय आयाम - AI में नैतिक जिम्मेदारी निवेश के चार प्रमुख स्तर हैं ।

VII. चुनौतियाँ एवं खतरे

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के तीव्र विकास और व्यापक अनुप्रयोगों के साथ अनेक गंभीर चुनौतियाँ एवं खतरे भी उभर कर सामने आए हैं, जिनका समय रहते समाधान न किया गया तो सामाजिक, आर्थिक और वैश्विक स्तर पर गहरे नकारात्मक प्रभाव पड़ सकते हैं। इनमें सबसे प्रमुख चुनौती AI आधारित स्वचालन से उत्पन्न रोजगार विस्थापन की है, जहाँ मशीनें और स्वचालित प्रणालियाँ मानव श्रम का स्थान ले रही हैं, परिणामस्वरूप पारंपरिक एवं निम्न-कौशल वाले अनेक रोजगार समाप्त होने की कगार पर हैं। इससे न केवल बेरोजगारी बढ़ने का खतरा है, बल्कि आय असमानता भी गहराने की आशंका है, क्योंकि उच्च तकनीकी कौशल रखने वाले सीमित वर्ग को ही नए अवसर मिलते हैं, जबकि बड़ी आबादी आर्थिक रूप से हाशिये पर चली जाती है। इसी से जुड़ी डिजिटल बहिष्करण की समस्या भी अत्यंत गंभीर है, जिसमें सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी अंतराल के कारण समाज का एक बड़ा वर्ग डिजिटल संसाधनों, इंटरनेट, AI आधारित सेवाओं और कौशल प्रशिक्षण से वंचित रह जाता है, जिससे अवसरों की असमानता और सामाजिक विभाजन और अधिक तीव्र हो जाता है। दूसरी ओर, फेक न्यूज और सोशल मीडिया का संकट AI के दुरुपयोग का एक खतरनाक रूप बन चुका है, जहाँ एल्गोरिदम आधारित प्रणालियाँ झूठी खबरों, दुष्प्रचार और हेट स्पीच को तेजी से फैलाने में सक्षम हैं; यह न केवल जनमत को भ्रमित करता है, बल्कि सामाजिक तनाव, अविश्वास, हिंसा और सामुदायिक संघर्ष को भी बढ़ावा देता है। चुनावी प्रक्रियाओं, लोकतांत्रिक संस्थाओं और सामाजिक सौहार्द पर इसका गहरा नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जिससे समाज में स्थिरता और शांति को गंभीर चुनौती मिलती है। इसके अतिरिक्त, वैश्विक डिजिटल विभाजन एक व्यापक और दीर्घकालिक खतरे के रूप में उभर रहा है, जिसमें विकसित और विकासशील देशों के बीच तकनीकी उपलब्धियों, अनुसंधान, डेटा नियंत्रण और AI अवसंरचना तक पहुँच में गहरा अंतर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। विकसित देश जहां AI तकनीक के विकास, मानक निर्धारण और वैश्विक नियंत्रण में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं, वहीं विकासशील देश उपभोक्ता या आश्रित की भूमिका में सीमित होते जा रहे हैं, जिससे वैश्विक शक्ति संतुलन असमान होता जा रहा है। यह स्थिति न केवल आर्थिक निर्भरता को बढ़ाती है, बल्कि वैश्विक असंतुलन, अस्थिरता और संभावित संघर्षों को भी जन्म दे सकती है। अतः स्पष्ट है कि AI की चुनौतियाँ केवल तकनीकी नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक भी हैं, और इनके समाधान के लिए समावेशी नीतियाँ, कौशल विकास, डिजिटल साक्षरता, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और नैतिक नियंत्रण तंत्र की अत्यंत आवश्यकता है।

VIII. सफलताएँ और सकारात्मक उपयोग

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के विकास ने केवल चुनौतियाँ ही नहीं, बल्कि अनेक उल्लेखनीय सफलताएँ और सकारात्मक उपयोग भी सामने लाए हैं, जिन्होंने मानव कल्याण, शांति और सामाजिक न्याय को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। AI आधारित प्रणालियों का उपयोग युद्ध-पीड़ित और संघर्षग्रस्त क्षेत्रों में मानवीय सहायता को अधिक प्रभावी, त्वरित और सटीक बनाने में किया जा रहा है, जहाँ उपग्रह चित्रों, ड्रोन डेटा और रीयल-टाइम विश्लेषण के माध्यम से आपदा की तीव्रता, विस्थापित जनसंख्या की स्थिति, भोजन, पानी और चिकित्सा सहायता की आवश्यकताओं का सही आकलन संभव हो सका है। इससे राहत सामग्री के वितरण, सुरक्षित मार्गों की पहचान और सीमित संसाधनों के सर्वोत्तम उपयोग में सहायता मिली है, जिससे लाखों प्रभावित लोगों तक समय पर मदद पहुँचाई जा सकी है। इसके अतिरिक्त, पूर्व-रोकथाम यानी Prediction and Prevention के क्षेत्र में AI ने अपराध, आतंकवाद, सामाजिक विवाद, महामारी और

प्राकृतिक आपदाओं के जोखिम का पूर्वानुमान लगाने में उल्लेखनीय योगदान दिया है; बड़े डेटा, पैटर्न विश्लेषण और मशीन लर्निंग मॉडल के माध्यम से संभावित खतरे वाले क्षेत्रों या परिस्थितियों की पहचान पहले ही कर ली जाती है, जिससे प्रशासन और सुरक्षा एजेंसियाँ समय रहते निवारक कदम उठा सकें और जान-माल की हानि को न्यूनतम किया जा सके। स्वास्थ्य क्षेत्र में भी AI ने महामारी के प्रसार, संक्रमण की गति और संसाधनों की जरूरतों का अनुमान लगाकर प्रभावी रणनीतियाँ बनाने में मदद की है। शांति निर्माण के संदर्भ में Dialogue Systems का उभरता हुआ प्रयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है, जहाँ AI आधारित चैटबॉट्स, सिमुलेशन प्लेटफॉर्म और संवाद मॉडल विभिन्न पक्षों के बीच संवाद, सहमति निर्माण और विश्वास बहाली में सहायक बन रहे हैं; ये प्रणालियाँ तटस्थ जानकारी प्रदान कर सकती हैं, संभावित समाधान विकल्पों का विश्लेषण कर सकती हैं और जटिल विवादों में भावनात्मक तनाव को कम करने में मदद करती हैं। इसके साथ ही, बाल अधिकारों और मानवाधिकारों को सशक्त बनाने में AI का उपयोग एक सकारात्मक परिवर्तन के रूप में देखा जा रहा है, जहाँ बच्चों, अल्पसंख्यकों और अन्य कमजोर समूहों के लिए लक्षित योजनाएँ और नीतियाँ तैयार करने में डेटा-आधारित अंतर्दृष्टि का सहारा लिया जा रहा है। शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, सुरक्षा और सामाजिक कल्याण से जुड़े आंकड़ों के विश्लेषण के माध्यम से यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि सहायता और संसाधन सही लाभार्थियों तक पहुँचें, शोषण और भेदभाव की पहचान समय पर हो तथा नीतियाँ अधिक समावेशी और प्रभावी बन सकें। इस प्रकार, जब AI का उपयोग नैतिकता, पारदर्शिता और मानव-केंद्रित दृष्टिकोण के साथ किया जाता है, तो यह शांति, सुरक्षा, मानवाधिकार और सतत विकास को बढ़ावा देने वाला एक शक्तिशाली साधन सिद्ध होता है। -

IX. उपाय, समाधान और आगे की दिशानीति और शासन में सुधार –

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के अनुप्रयुक्त क्षेत्रों में इसके सुरक्षित, नैतिक और मानव-केंद्रित उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए कठोर एवं दूरदर्शी नीति निर्माण अत्यंत आवश्यक है, जिसमें प्रत्येक निर्णय प्रक्रिया में "ह्यूमन ओवरसाइट" को अनिवार्य किया जाए ताकि मशीन आधारित निर्णयों पर मानवीय विवेक, उत्तरदायित्व और संवेदनशीलता बनी रहे। इसके अंतर्गत पारदर्शी और न्यायपूर्ण तंत्र की स्थापना हेतु स्पष्ट कानून, सुदृढ़ विनियम, व्यावहारिक नीतियाँ तथा संभावित जोखिमों के लिए प्रतिस्थापन योजनाएँ विकसित की जानी चाहिए, जिससे AI के दुरुपयोग, भेदभाव और असमानता को रोका जा सके। साथ ही, शिक्षा और जागरूकता इस पूरी प्रक्रिया का आधार स्तंभ होनी चाहिए; स्कूलों, विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों में AI नैतिकता, मानव मूल्यों, शांति और सामाजिक उत्तरदायित्व से संबंधित पाठ्यक्रमों को शामिल करना आवश्यक है, ताकि भावी पीढ़ी तकनीक को केवल दक्षता के उपकरण के रूप में नहीं बल्कि समाज के कल्याण के साधन के रूप में समझे। इसके समानांतर, सामाजिक साक्षरता और डिजिटल जागरूकता अभियानों का व्यापक विस्तार किया जाना चाहिए, जिससे आम नागरिक AI के लाभ, सीमाएँ और जोखिमों को समझ सकें तथा सूचित निर्णय लेने में सक्षम बनें। तंत्रात्मक सहयोग के बिना यह लक्ष्य अधूरा रहेगा, इसलिए सार्वजनिक और निजी संस्थानों, नागरिक समाज, सरकार तथा अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के बीच सशक्त और सतत सहयोग को बढ़ावा देना आवश्यक है, ताकि अनुभव, संसाधन और ज्ञान का साझा उपयोग हो सके। इसी क्रम में वैश्विक तकनीकी मानकों का निर्माण और उनके पालन को सुनिश्चित करना जरूरी है, जिससे विभिन्न देशों और प्रणालियों के बीच सामंजस्य स्थापित हो और AI का विकास असंतुलित या अनियंत्रित न हो। तकनीकी नवाचार भी इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जैसे Explainable AI के माध्यम से निर्णय प्रक्रियाओं को समझने योग्य बनाना, Bias-free algorithms और Fairness Testing द्वारा भेदभाव को कम करना तथा विश्वास बढ़ाना। इसके अतिरिक्त, गोपनीयता संरक्षण के लिए Differential Privacy, Homomorphic Encryption और Federated Learning जैसी Privacy-preserving तकनीकों का प्रयोग आवश्यक है, ताकि डेटा की सुरक्षा बनी रहे और व्यक्तियों के अधिकारों का उल्लंघन न हो। इस प्रकार, नीति, शिक्षा, सहयोग और तकनीकी सुधारों का समन्वित दृष्टिकोण ही AI को एक शांतिपूर्ण, न्यायसंगत और मानव-कल्याणकारी शक्ति के रूप में स्थापित कर सकता है।

निष्कर्ष

[1] AI के विकास की गति और प्रभाव का कोई क्षेत्र अछूता नहीं रह गया है शांति और मानवता भी नहीं। जिम्मेदार AI विकास, उपयोग और विनियमन के बिना इसका लाभ सीमित होगा और शांति को खतरा पहुँच सकता है। इसलिए, तकनीकी नवाचार और नैतिक विनियमन की सहयात्रा आवश्यक है। प्रत्येक नीति-निर्माता,

तकनीकी विशेषज्ञ, समाज और सरकार का उत्तरदायित्व है कि AI के विकास में शांति, न्याय, मानवाधिकार, समावेशिता, और नैतिकता के मूल्यों से समझौता न हो ।

[2] संदर्भ (References) ग्रंथ सूची -

[3] Drishti IAS: "कृत्रिम बुद्धिमत्ता और नैतिकता"

[4] Drishti IAS: "AI के नैतिक निहितार्थों का अन्वेषण"

[5] Cambridge Data & Policy: "AI for Peace: Mitigating the risks and enhancing opportunities"

[6] Convin Blog: "Examples of Responsible AI and Its Real-World Applications"

[7] Drishti IAS: "Ethical Considerations for Responsible AI Use in War"

[8] ResearchGate: "Ethics and Responsible AI Deployment"□ Drishti IAS: "कृत्रिम बुद्धिमत्ता और नैतिकता"